ईसप की
दंतकथाएँ

ईसप की दंतकथाएँ

ईसप की दंतकथाएँ कई रूपों में सामने
आईं हैं क्योंकि वे पहली बार ढाई हज़ार
साल पहले लिखी गईं थीं.
सुकरात ने स्वयं उनमें से कुछ
कहानियों पर कविताएँ लिखीं थीं,
और आर्टिस्ट आज भी उन्हें नए-नए
चित्रों से सजाते हैं.

शेर की खाल में गधा

गधे को कहीं से शेर की खाल मिल गई.
उसने उसे पहन लिया. फिर वो लोगों
को डराता हुआ चलता गया.

उसे देखते ही हर कोई डर के मारे
दौड़ पड़ता. उन्हें वो शेर लगता.

थोड़ी देर बाद गधा सोचने लगा कि वो
वाकई में एक शेर था. फिर उसने
गरजने के लिए अपना मुँह खोला,

लेकिन सिर्फ
ढेंचू! ढेंचू!
ही बाहर आया ...

"अच्छा, तो यह तुम ही थे?"
लोमड़ी ने कहा. "तुमने मुझे तब
तक बेवकूफ बनाया जब तक
तुमने अपना मुंह नहीं खोला."
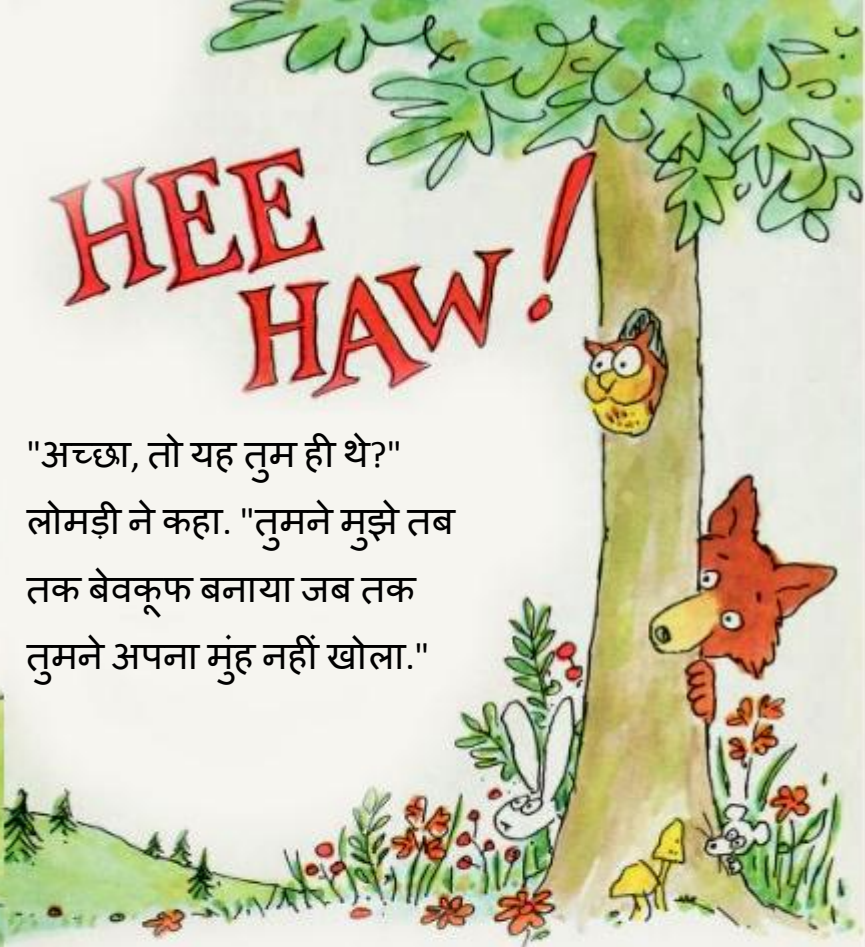
कभी-कभी अपना मुंह बंद रखकर
लोग अधिक सम्मान पा सकते हैं.

नहाता लड़का

एक आदमी ने मदद के लिए उस लड़के की रोने की आवाज सुनी. आदमी नदी के किनारे आया और लड़के को इतनी लापरवाही बरतने के लिए डांटने लगा. "अरे, सर," लड़के ने कहा, "कृपया मुझे पहले बचाएं, बाद में डांटें."
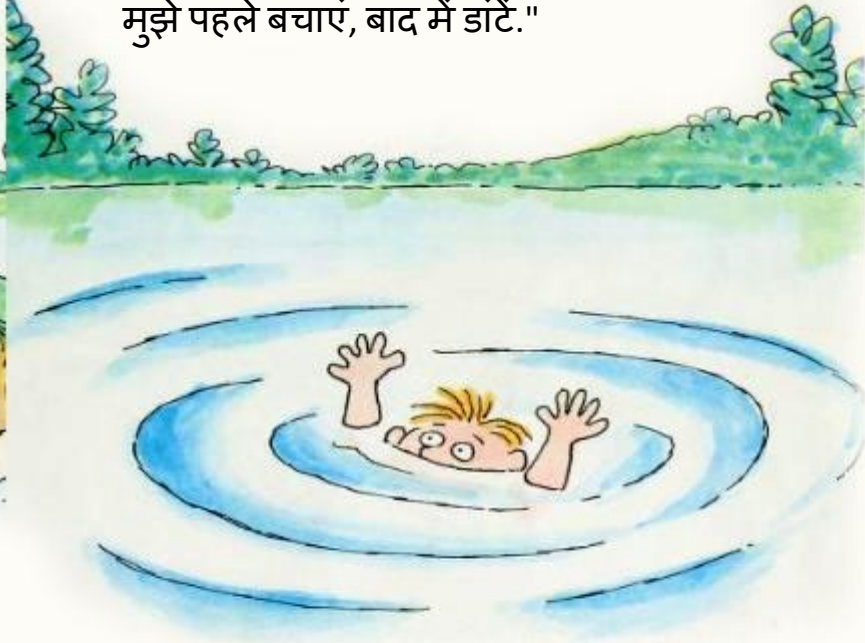
एक लड़का एक नदी में नहाते समय बड़ी गहराई में चला गया. वो डूबने वाला था.

संकट में सहायता दें, सलाह नहीं.

कुत्ता और उसकी परछाई

एक कुत्ते को अपनी पसंद की एक हड्डी मिली.

वो उसे घर ले जा रहा था.

पुल पार करते हुए उसने पानी

में अपना प्रतिबिंब देखा.

उसे लगा पानी वाले कुत्ते के

पास उससे भी बड़ी हड्डी थी.

उसने दूसरे कुत्ते की हड्डी छीनने की कोशिश की लेकिन उस दौरान उसकी खुद की हड्डी पानी में गिर गई.
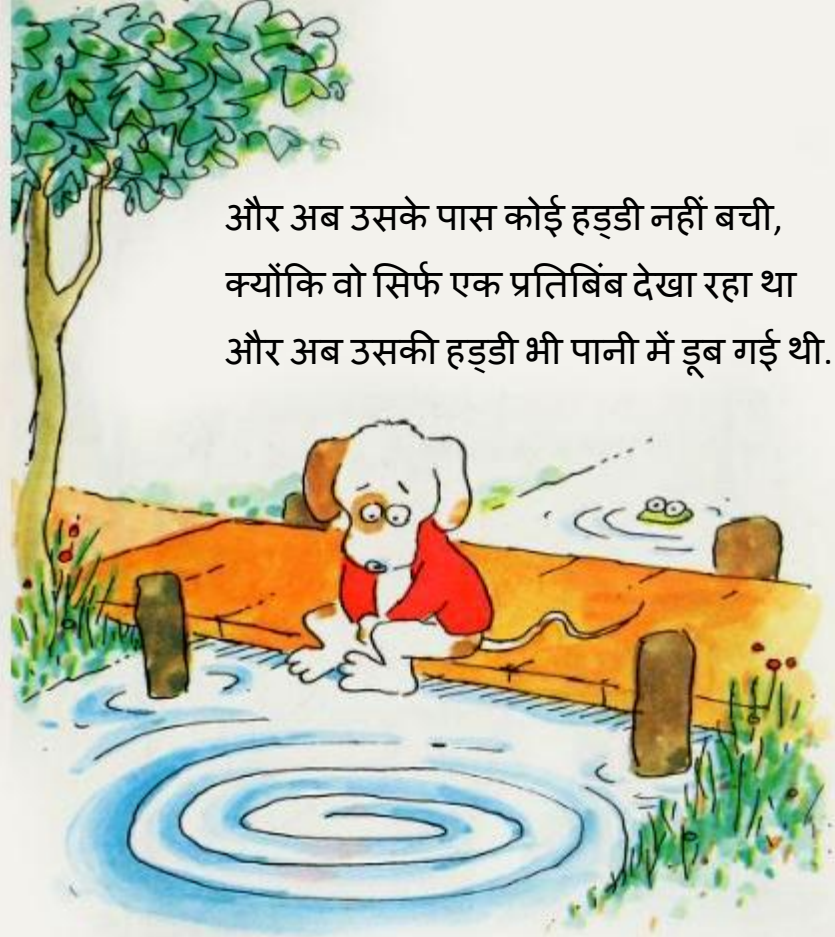
और अब उसके पास कोई हड्डी नहीं बची, क्योंकि वो सिर्फ एक प्रतिबिंब देखा रहा था और अब उसकी हड्डी भी पानी में डूब गई थी.

परछाई पकड़ने की कोशिश में कहीं आप असली चीज़ भी न खो बैठें.

लोमड़ी और कौआ

एक कौवा शाख पर बैठा था.

उसकी चोंच में एक पनीर का टुकड़ा था.

नीचे खड़ी लोमड़ी

पनीर चाहती थी.

पनीर कैसे लिया जाए

यह उसे पता था.

"कितना सुंदर पक्षी है!" लोमड़ी ने ज़ोर से कहा, जिससे कौवा उसकी बात सुन सके. "निश्चित रूप से उस सुन्दर पक्षी की आवाज भी बहुत प्यारी होगी. उसका गाना सुनकर मुझे कितना अच्छा लगेगा."

मूर्ख पक्षी ने गाने के लिए
तुरंत अपना मुँह खोला.
लेकिन उसके मुंह से
सिर्फ "कांव" निकला
और साथ में पनीर भी.
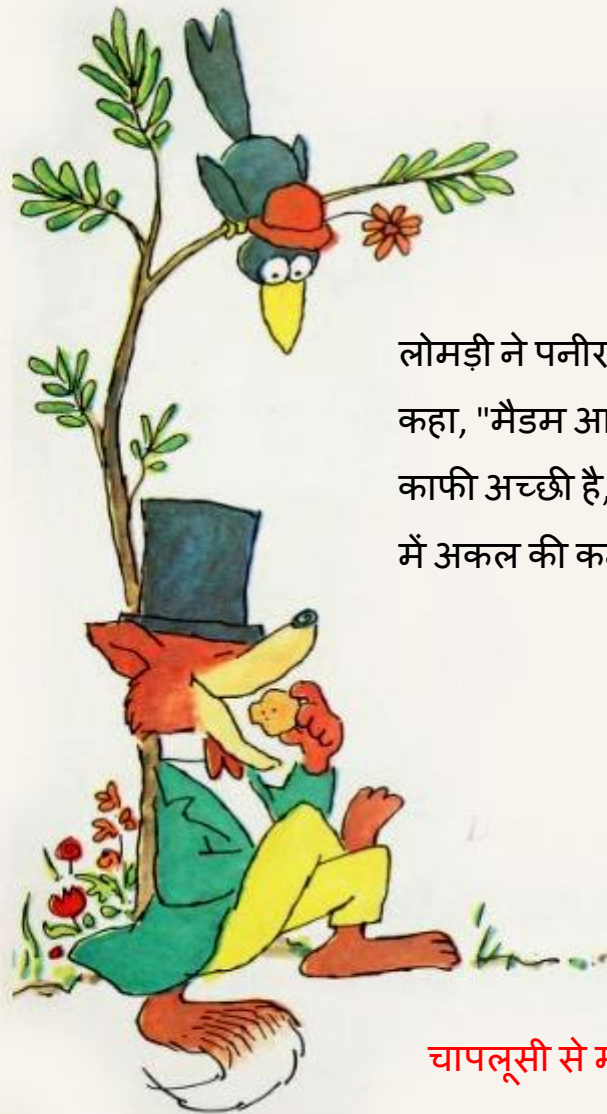
लोमड़ी ने पनीर खाते हुए
कहा, "मैडम आपकी आवाज
काफी अच्छी है, लेकिन आप
में अकल की कमी है.”

चापलूसी से मूर्ख मत बनो.

लोमड़ी और अंगूर

एक भूखी लोमड़ी को एक ऊंची बेल पर
कुछ मोटे और रसीले अंगूर दिखाई दिए.

उसने अंगूर तोड़ने की भरसक कोशिश
की मगर वे उसकी पहुंच के बाहर थे.

अंत में लोमड़ी को अंगूर खाने
का इरादा ही छोड़ना पड़ा.

अपनी निराशा को छिपाते हुए उसने कहा,
"मुझे वो अंगूर नहीं चाहिए,
वो अंगूर खट्टे थे."

लोगों को जो नहीं मिलता है,
वो उसे न चाहने का, बहाना बनाते हैं.

मच्छर और बैल

मच्छर एक बैल के सींग पर बैठ गया और
काफी देर तक वहां आराम करता रहा.

अंत में जब मच्छर उड़ने को तैयार हुआ,
तो उसने कहा, "मुझे माफ करें? मुझे अब जाना है."

"चलो, आगे बढ़ो," बैल ने कहा. "जब तुम आए तब
मैंने तुम्हें महसूस नहीं किया और जब तुम चले
जाओगे तो भी मैं तुम्हें याद नहीं करूंगा."

दूसरों की तुलना में हम कभी-कभी
खुद को अधिक महत्व देते हैं.

बत्तख और सोने के अंडे

एक आदमी और उसकी पत्नी बहुत भाग्यशाली थे.
उनके पास सोने के अंडे देने वाली एक बत्तख थी.

हालांकि वे भाग्यशाली थे, पर उन्हें लगता था कि वे बहुत तेज़ी से अमीर नहीं हो रहे थे - क्योंकि उनकी बत्तख एक दिन में केवल एक ही अंडा देती थी.

उन्होंने कल्पना की कि शायद बत्तख के पेट में ठोस सोना भरा हो. फिर उन्होंने बत्तख को मारकर एक ही बार में सारा सोना पाने का फैसला किया. लेकिन जब उन्होंने बत्तख को काटा तो उन्होंने पाया कि वो बत्तख भी किसी अन्य बत्तख जैसी ही थी.
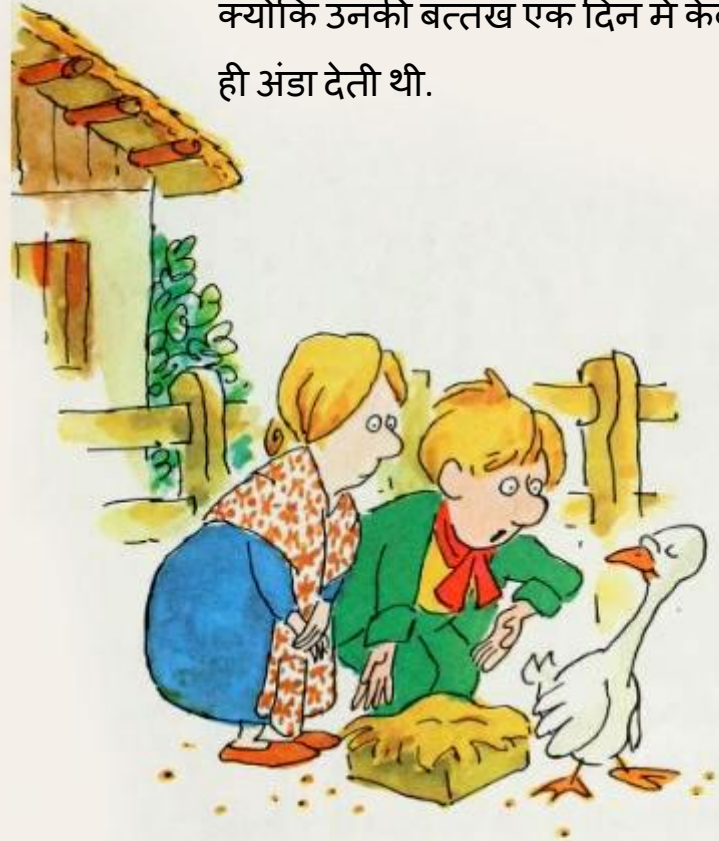
रात के खाने में उन्होंने भुनी बत्तख खाई. बहुत अधिक चाहने के लालच में उन्होंने अपना सब कुछ खो दिया.

जो तुम्हारे पास है, उसमें खुश रहो.

ग्वालिन और उसकी बाल्टी
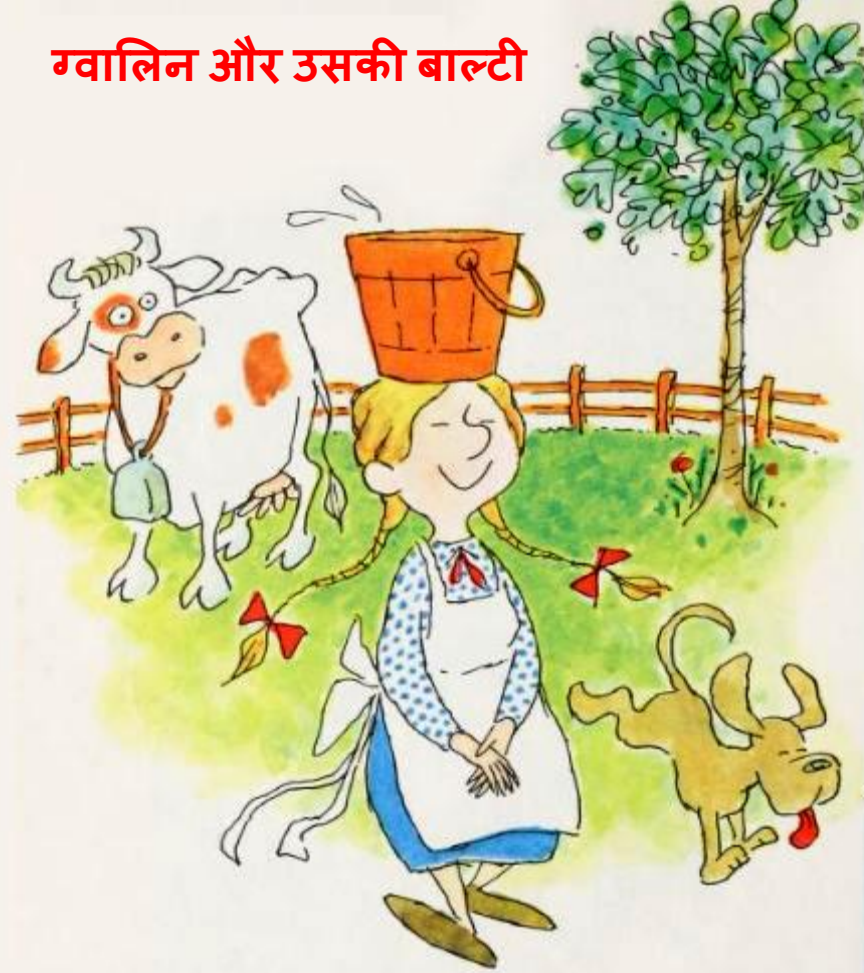
ग्वालिन अपने सिर पर दूध की बाल्टी लिए जा रही थी. वो सोच रही थी कि वो उस दूध का क्या करेगी.

"मैं इस दूध को बिलोकर मक्खन बनाऊंगी," उसने सोचा. “फिर मैं मक्खन बेचकर कुछ अंडे खरीदूंगी.”

"उन अंडों से जल्द ही चूज़े निकल आएंगे और फिर जल्द ही मेरे पास बहुत सारी मुर्गियां होंगी."

"मैं मुर्गियों की बेंचकर अपने लिए एक अच्छी पोशाक खरीदूंगी. सभी लड़के मेरी शानदार पोशाक देखकर मेरे साथ नृत्य करना चाहेंगे. लेकिन मैं सिर्फ न-न कहूंगी और फिर इस तरह अपना सिर हिलाऊंगी."

यह कहकर उसने ज़ोर अपना सिर हिलाया.

जब तक मुर्गियां पैदा न हों
तब तक उन्हें न गिनें.

बैल और मेंढक

कुछ मेंढकों ने एक बैल को देखा.
"वो कितना बड़ा है!" एक ने कहा.

"अगर मैंने कोशिश की
होती तो मैं उससे भी बड़ा
हो सकता था," दूसरे ने
खुद को गुदगुदाते हुए कहा.
"क्या मैं उस बैल जितना
बड़ा नहीं हूँ?"

"बिल्कुल नहीं," उसके दोस्त
ने कहा. डींग मारने वाले मेंढक
ने एक गहरी साँस ली.

"बैल तुम से बड़ा है," उसके दोस्त ने कहा.

फिर घमंडी मेंढक
अंदर सांस खींच-
खींचकर बड़ा और
बड़ा होता गया.

उसके साथ ही मेंढक ने
एक बहुत गहरी सांस ली
... और वो फट गया!

"बैल अभी भी तुम से बड़ा है,"
उसके दोस्त ने कहा.

जो बहुत डींग मारता है
वो कभी ज़रूर मुंह की खाता है.

चरवाहा और भेड़िया

एक चरवाहे लड़के ने पास के गाँव के लोगों से

साथ मज़ाक करने की सोची. फिर वो चिल्लाया:

भेड़ों को बचाने के लिए लोग दौड़े आए.

पर उन्हें वहाँ कोई भेड़िया नहीं दिखा.

चरवाहे लड़के को यह बेहूदा मज़ाक बहुत अच्छा

लगा और उसने बाद में यह चाल कई बार चली.

फिर भेड़िये ने भेड़ों के साथ
वही किया जो भेड़िया
आमतौर पर करता है.

फिर एक दिन सचमुच में भेड़िया आया. लड़का चिल्लाया, "भेड़िया! भेड़िया!" वो पूरा दम लगाकर चिल्लाया. लेकिन लोग उसके झूठे चिल्लाने के इतने अभ्यस्त हो गए थे कि किसी ने भी उसकी चीख पर ध्यान नहीं दिया.
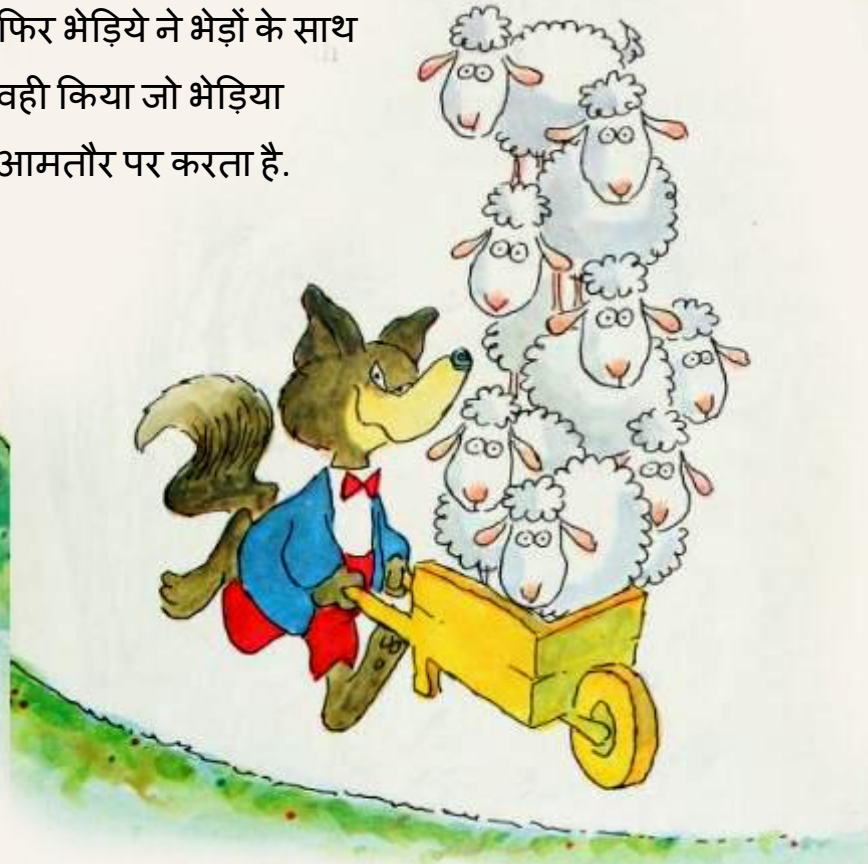
कोई झूठा अगर सच भी बोल रहा हो
तब भी लोग उसकी बात पर यकीन नहीं करेंगे.

शहरी चूहा, देसी चूहा

एक शहरी चूहा अपने चचेरे भाई
देसी चूहे से मिलने गया. देसी चूहा
एकदम सादा जीवन जीता था.
"क्या तुम बस यही खाते हो?" शहरी
चूहे ने पूछा. "मैं शहर में एक राजा
की तरह रहता हूँ! तुम मेरे साथ
आओ और कुछ दिन मेरे साथ रहो?"
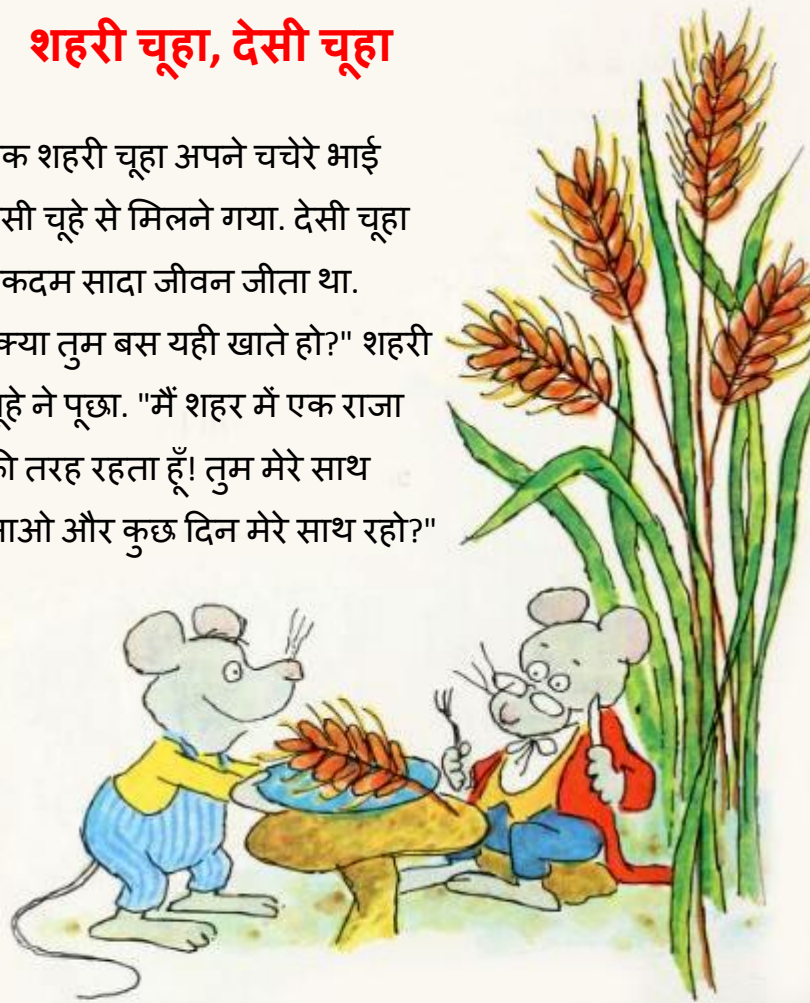
इसलिए जब शहरी चूहा वापस
घर गया, तो देसी चूहा भी
उसके साथ-साथ शहर गया.
देसी चूहे ने अपने पूरे जीवन
में कभी भी इतनी अच्छी चीजें
नहीं खाईं थीं!
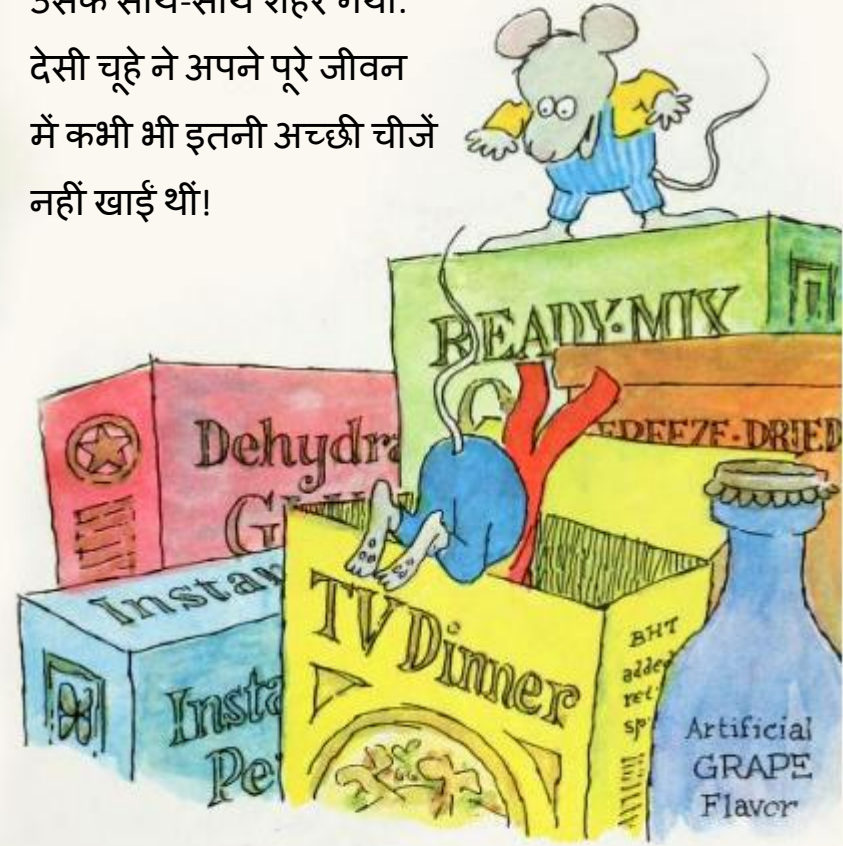
लेकिन हर बार जब वे भोजन करने के लिए
बैठते, तो कोई अंदर आता और चूहों को
अपनी दुम दबाकर भागना पड़ता था.

"मैं घर वापस जा रहा हूँ!" देसी चूहे ने शहरी चूहे से
कहा. "गांव में खाना भले ही फैंसी न हो, लेकिन मैं उसे
कम-से-कम शांति से तो खा सकता हूं."

शांति में रूखा-सूखा भी अच्छा,
डर में मीठा भी फीका.

भेड़िया और हंस

हंस ने अपने सिर को भेड़िये के मुंह में डाला. अपनी लम्बी चोंच से उसने काफी आसानी से हड्डी बाहर निकाल दी.

एक भेड़िये के गले में एक हड्डी फंस गई. उसने हड्डी बाहर निकालने के लिए हंस को इनाम देने का वादा किया.

लेकिन जब उसने अपना इनाम मांगा, तो भेड़िये ने अपने पैने दाँत दिखाते हुए हंस से कहा:

"तुमने अपना सिर भेड़िए के मुंह में डाला और फिर भी तुम ज़िंदा बचे. इससे बड़ा इनाम तुम और क्या मांग सकते हो?"

नीच लोगों के साथ व्यवहार में
यदि आपका सिर सलामत रहे तो बड़ी गनीमत है.

भेड़ की खाल में भेड़िया

एक भेड़िए ने भेड़ की खाल ओढ़ी जिससे वो
झुंड में घुसकर भेड़ों का शिकार कर सके.

जब भेड़ें चरागाह में चर रही थीं तब
भेड़िया उनके झुंड में जाकर मिल गया.

भेड़ की खाल पहनकर भेड़िए ने
चरवाहे को अच्छा धोखा दिया.

शाम को चरवाहे ने बाकी भेड़ों के साथ भेड़िए को भी बंद कर दिया गया. "आज रात मैं अच्छी तरह से खा पाऊंगा," भेड़िया ने कहा. तभी चरवाहा अगले दिन के लिए कुछ मांस लेने के लिए वापिस लौटा.

चरवाहे ने गलती से भेड़िये को भेड़ समझकर वहीँ मौके पर उसे मार दिया.

मुसीबत की तलाश मत करो.
क्या पता कोई और मुसीबत तुम्हारे मत्थे पड़ जाए.

समाप्त